http://www.mgkvponline.com

8808

B.A. I Year (Exam. 2017-18)

Sub. : हिन्दी (Paper I)

प्राचीन काव्य

M.M. 10(

Time : 3.00 Hrs.

Note : (1) Attempt all questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

(2) Marks for each question are indicated in the right hand ma

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके दाहिनी ओर अंकित हैं।

खण्ड 'अ'

(व्याख्यात्मक प्रश्न)

निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(क) ज्यौं नैननि मैं पूतरी, त्यौ खलिक घट माँहिं।

मूरिख लोग न जानहीं, बाहरि ढूँढ़त जाँहिं।।

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

जाके मुहँ माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप।

युह्द बासं तैं पातरा; औसा तत्त अनूप।।

अथवा

कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल हौं बिरहँ जारी।

चौदह करा कीन्ह परगासू। जानहु जरैं सब धरति अकासू।

तन मन सेज करै अगिदाह, सब कहँ चाँद मोहिं होइ राहू।

चहूँ खँड लागै अँधियारा। जौ घर नाहिनं कंत पियारा।

अबहूँ निठुर आप एहिं के बारा। परब देवारी होइ संसारा।

सखि झूमक गावहिं अंग मोरी। हौं झूरौं बिछुरी जेहि जोरी।

जेहि घर पिउ से मनोरथ पूजा। मो कहँ बिरह सवति दुख दूजा

सखि मानहिं तेवहार सब, गाई देवारी खेलि।

हौं का खेलौं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि।। 10

(ख) हमकौ सपनैहू मैं सोच। http://www.mgkvponline.com

जा दिन तैं बिछुरे नन्दनन्दन, ता दिन तै यह पोच।

मनु गुपाल आये मेरे गृह, हँस करि भुजा गही।

कहा कहौं बैरिनि भइ निदिया, निमिष न और रही।

ज्यौं चकई प्रतिबिम्ब देखिकै, आनन्दे पिय जानि।

'सूर' पवन मिलि निठुर विधाता, ~~चपल~~ कियौ जल आनि।।

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

अथवा

बिनती भरत करत कर जोरे।

दीनबंधु! दीनता दीन की कबहुँ परै जनि भोरे।।

तुम्हसे तुम्हारि नाथ मोको, मोसे जन तुमको बहुतेरे।

इहै जानि, पहिचानि प्रीति, छमिए अछ-औगुन मेरे।।

यों कहि सीय-राम-पाँयनि परि लषन लाइ उर लीन्हें।

पुलक सरीर, नीर भरि लोचन, कहत प्रेम-पन - कीन्हें।।

तुलसी बीते अवधि प्रथम दिन, जो रघुबीर न ऐहौं।

तौ प्रभु-चरन-सरोज-सपथ, जीवत परिजनहि न पै हौं।।

(ग) बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय। 10

सौंह करैं भौंहनि हँसै दैन कहे नटि जाय।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन में करत हैं, नैननु हीं सब बात।।

अथवा

मीत सुजान अनीत करौजिन, हा-हा न हूजियै मोहि अमोही।

दीठि को और कहूँ नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की दोही।

एक विसास की टेक गहें लगि आस रहे बसि प्रान बटोही।

हौं घनआनँद जीवन मूल दई। कित प्यासनि मारत मोहि।।

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

खण्ड 'ब'

(निबन्धात्मक प्रश्न)

2. कबीर की सामाजिक-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

जायसी के विरह वर्णन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सूर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिए।

3. तुलसी की समन्वय-भावना पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

घनानँद 'प्रेम के पीर' के कवि हैं, विवेचना कीजिए।

खण्ड 'स'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

4. किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- प्रत्येक 5 अंक

(क) कबीर की दार्शनिक विचारधारा।

(ख) जायसी का बारहमासा वर्णन।

(ग) सूर का वात्सल्य-वर्णन।

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

(घ) तुलसी की भक्ति-भावना।

(ङ) भक्तिकाल की विशेषताएँ।

(च) रीति मुक्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

(छ) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

(ज) घनानँद की भाषा।

खण्ड 'द'

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

Q.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- प्रत्येक 2 अंक

(अ) कबीर के गुरु का क्या नाम है?

(i) गोरखनाथ

(ii) रामानन्द

(iii) परमानन्द

(iv) बल्लभाचार्य

(ब) उलटवाँसी के माध्यम से किस कवि ने अपनी बातें कही हैं?

(i) जायसी

(ii) कबीरदास

(iii) सूरदास

(iv) नंददास

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

(स) 'बारहमासा' का वर्णन किस कवि ने किया है?

(i) कबीर

(ii) जायसी

(iii) सूरदास

(iv) घनानंद

(द) 'रामचरित मानस' किसकी रचना है?

(i) सूरदास

(ii) तुलसीदास

(iii) नंददास

(iv) केशवदास

(य) तुलसीदास किस काव्यधारा के कवि है?

(i) ज्ञानाश्रयी काव्य धारा

(ii) प्रेमाश्रयी काव्य धारा

(iii) कृष्ण काव्य धारा

(iv) रामकाव्य धारा

(र) भ्रमरगीत परम्परा में कौन से कवि आते है?

(i) सूरदास

(ii) तुलसीदास

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

(iii) केशवदास

(iv) घनानन्द

(ल) 'बिहारी सतसई' में किस रस की प्रधानता है?

(i) वीर रस

(ii) शांत रस

(iii) श्रृंगार रस

(iv) हास्य रस

(व) घनानन्द किस काव्य धारा के कवि है?

(i) रीति सिद्ध काव्य धारा

(ii) रीतिबद्ध काव्य धारा

(iii) रीतिमुक्त काव्य धारा

(iv) प्रेमाश्रयी काव्य धारा

(श) घनानन्द के काव्य की भाषा क्या है?

(i) अवधी

(ii) ब्रजभाषा

(iii) खड़ी बोली

(iv) बघेली

(ष) रीतिकाल को 'श्रृंगार काल' किसने कहा है?

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com

(ii) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(iii) जार्ज ग्रियर्सन

(iv) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

♦ ♦ ♦

http://www.mgkvponline.com

Whatsapp @ 9300930012
Your old paper & get 10/-
पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

Scanned

http://www.mgkvponline.com

http://www.mgkvponline.com